3

कवि परिचय-3

संस्कृत साहित्य में अनेक कवि हैं जिसकी कृतियाँ सुशोभित हो रही हैं। उनकी जो कृतियां हैं वे पुस्तक रुप में हमारे सामने आती हैं। किन्तु उन कवियों के विषय में हमारा ज्ञान नहीं होता है। अत: उन कवियों के देश और काल का ज्ञान अनिवार्य है। क्योंकि कवियों के काव्य प्राय: देश और काल से प्रभावित होते हैं। इस प्रकरण में माघ, श्रीहर्ष, क्षेमेन्द्र, कल्हण और भट्टिस्वामी के विषय में आलोचनात्मक अध्ययन है। उनके चरित, काव्य के विशिष्ट गुण, रीति इत्यादि विषय यहां सम्यक् रुप से संग्रहित हैं। इस परिच्छेद में उनको हम ध्यान से पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- माघ, श्रीहर्ष, क्षेमेन्द्र, कल्हण, और भट्टिस्वामी आदि इन कवियों के देश काल और कृतियों को जान पाने में;
- उनकी काव्य रचना शैली को समझ पाने में;
- शिशुपालवध काव्य के विषय में जानकारी प्राप्त कर पाने में और;
- 'माघे सन्ति त्रयो गुणा:' इस उक्ति का तात्पर्य समझ पाने में।

3.1 माघ

3.1.1 सामान्य परिचय

माघ कवि ने अपनी कृति शिशुपालवध काव्य के अन्त में स्वयं का परिचय दिया है। उस से ज्ञात होता है कि दत्तक नाम के माघ के पिता थे। उनके पितामह सुप्रभदेव ने वर्मलात नामक राजा के अमात्य पद को अलंकृत किया।

3.1.2 माघ का देश

मीनमल्लपुर नामक एक नगर था वह विद्या की पीठ के रुप में प्रसिद्ध था। यह एक राजधानी भी थी। माघ का जन्म प्रसिद्ध मीनमल्ल नामक नगर में हुआ था। मेरुतुंगाचार्य के मत में श्रीमालनगर माघ का निवास स्थल था। इस समय गुर्जर प्रदेश में भिन्नमाल नामक ग्राम है वह ही कवि का स्थल था ऐसा अनेक विद्वान मानते हैं। भोजप्रबन्ध में इन्हे गुर्जर निवासी वर्णित किया गया है।

3.1.3 माघ का समय

वामनकृत काव्यालंकार ग्रन्थ, आनन्दवर्धन कृत ध्वन्यालोक, और मुकुलभट्ट रचित अभिधावृतिमातृका आदि ग्रन्थों में माघ के पद्यों को उद्धरण के रुप प्रस्तुत किया है। अत: माघ इन कवियों से पूर्व कालिक सिद्ध होते हैं। महान् विद्वानों के महान् अनुशीलन से ज्ञात हुआ कि माघ का समय सातवीं शताब्दी के अन्त से आठवी शताब्दी पर्यन्त है।

3.1.4 माघ की रचनाएं

माघ का शिशुपालवध नामक एक काव्य प्राप्त होता है। इस काव्य में 20 सर्ग हैं। 1625 श्लोक हैं। इसमें युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध किया जाता है। महाभारत में कही गयी यह कथा, वर्णन के महत्त्व से चमत्कारी हुई। इसमें नायक श्रीकृष्ण और प्रतिनायक शिशुपाल है।

पाठगतप्रश्न-3.1

1. माघ के पिता कौन थे?
2. माघ के पितामह कौन थे?
3. माघ के पितामह किस राजा की सभा में थे?

टिप्पणी

4. माघ का जन्म किस नगर में हुआ?
5. माघ का निवास स्थल क्या था?
6. आनन्दवर्धन के ग्रन्थ नाम क्या है?
7. वामनकृत ग्रन्थ नाम क्या है?
8. माघ आनन्दवर्धन के पूर्वकालिक कैसे हुए?
9. माघ का समय क्या है?
10. माघ की रचना कौन सी है?
11. शिशुपालवध का मुख्य विषय क्या है?
12. शिशुपालवध काव्य का उपजीव्य ग्रन्थ कौन है?
13. शिशुपालवध का नायक कौन है?
14. शिशुपालवध का प्रतिनायक कौन है?

3.2 शिशुपालवध काव्य

इसमें महाभारत की अपेक्षा महाकाव्य उपयोगी अनेक विषय वर्णित हैं। तृतीय सर्ग से तेरह सर्ग तक भगवान श्रीकृष्ण के ऐश्वर्य, जलक्रीडा, रैवतक पर्वत, सन्ध्या प्रातः प्रकृति आदि के वर्णन के बाद महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण के आगमन का वर्णन है।

महाकवि माघ द्वारा प्रणीत शिशुपालवध महाकाव्य 20 सर्गो में पूर्ण हुआ। उसका ऐतिहासिक वृत्त अधोलिखित है–

पाण्डवों ने वनवास की अवधि पूर्ण करके इन्द्रप्रस्थ नगरी को अधिकृत किया। भगवत श्रीकृष्ण की कृपा से अर्जुन, भीम, नकुल व सहदेव के पराक्रम से धर्मराज युधिष्ठिर ने समग्र जम्बूद्वीप को जीतकर विपुल धन सम्पत्ति को एकत्र किया। इस प्रकार अतुल साम्राज्य और विपुल वैभव को प्राप्त करके युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ को करने की इच्छा की। प्रायः समग्र जम्बूद्वीप (एशिया) को, भगवान श्रीकृष्ण को, अनुयायियों और विरोधियों को राजसूय यज्ञ में आमंत्रित किया। इस यज्ञ में भगवान श्रीकृष्ण सर्वकर्मद्रष्टा थे। सभी राजाओं ने अपनी योग्यतानुसार यज्ञ के कार्यो में भाग ग्रहण किया। यह ऐतिहासिक यज्ञ था। अतीव महान सुन्दरता से यज्ञ सम्पन्न हुआ। याज्ञिक ब्राह्मण का दान दक्षिणा से सत्कार किया।

इनके बाद सदस्य पूजा का अवसर उपस्थित हुआ। शास्त्रों के अनुसार यज्ञ की समाप्ति पर गुणवानों को अर्ध्य प्रदान करने का नियम है। किसको कितनी प्रतिष्ठा देनी चाहिए इस विषय में युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से पूछा। शास्त्रों के अनुसार षड्गवेद, वेद अध्ययन, अध्यापन रत, ब्राह्मण, स्नातक, गुरु, बन्धु, जामाता, राजा और ऋत्विक याज्ञिक ये छः सदस्य पूजा के योग्य होते है। यदि कोई सर्वगुणसम्पन्न हो तो वह भी पूजा के योग्य होता है। भीष्म ने इस

प्रतिष्ठा के लिए भगवान श्रीकृष्ण ही महान हैं ऐसी उद्घोषणा की। युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण की ही पूजा करें।

शिशुपाल भगवान श्रीकृष्ण के इस सम्मान को देखने के लिए सहमत नहीं थे। वह क्रोध से आविष्ट होकर नेत्रों को लाल करता हुआ उच्च आह भरने लगा। धर्मराज युधिष्ठिर की निन्दा करके भगवान श्रीकृष्ण के ऊपर अनेक प्रकार के आक्षेप करने को प्रवृत हुआ। भगवान श्रीकृष्ण मौन को धारण करते हुए मन में शिशुपाल के अपराधों की गणना कर रहे थे। भीष्म शिशुपाल की इस धृष्टता को सहन करने में असमर्थ हो गये और उसके मुख से भगवान श्रीकृष्ण की निन्दा को सुनकर वे क्षुब्ध हो गये। उन्होंने कहा ''अब मैं कहता हूँ जिसको भगवान श्रीकृष्ण की पूजा अच्छी नहीं लग रही वह धनुष को धारण करे''। भीष्म की इस उक्ति पर शिशुपाल समर्थक राजा यज्ञ मण्डल से बाहर जाने के लिए उद्यत हुए। शिशुपाल फिर कठोर वचन बोला, वह उस स्थान से निकलकर भगवान श्रीकृष्ण को युद्ध के लिए ललकार कर सेना सज्जा करना आरम्भ किया। पाण्डव और उनके पक्ष वाले राजा शान्त थे। सेना सज्जा को धारण कर के शिशुपाल ने राजसभा में अपना दूत भेजा। उस दूत ने कठोर शब्दों से श्रीकृष्ण की निन्दा की। भगवान श्रीकृष्ण की प्रेरणा से सात्यकि ने आक्षेपों का उचित उत्तर दिया। फिर भी वह अनेक निन्दा रूप वाक्यों को कह रहा था। उससे श्रीकृष्ण और उनके समर्थक राजा अत्यन्त क्रुद्ध हो गये। अन्त में युद्ध शुरू हुआ। शिशुपाल की सम्पूर्ण सेना नष्ट हो गई। सेना के विनष्ट होने पर वह स्वयं श्रीकृष्ण के साथ युद्ध करने लगा। युद्ध करता हुआ वह थककर कठोर वचनों को बोलने लगा। उसके बाद सौ अपराध पूर्ण होने पर उसके वध में अधिक विलम्ब को अनुचित मानकर श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल के सिर को काट दिया। उसी समय उसके शरीर से एक तेज समूह निकलकर श्रीकृष्ण के शरीर में प्रवेश कर गया। सभी इस घटना से विस्मित हो गये।

पाठगतप्रश्न-3.2

15. महाराज युधिष्ठिर ने कौन सा यज्ञ सम्पादित किया?
16. शिशुपालवध काव्य में कितने सर्ग है?
17. पाण्डवों ने वनवास की अवधि को पूर्ण करके किस नगर में निवास किया?
18. राजसूययज्ञ में किनको बुलाया?
19. इस यज्ञ में कौन सर्वकर्मद्रष्टा था?
20. शास्त्रानुसार यज्ञ समाप्ति पर किसे अर्घ्य प्रदान करने का नियम है?
21. शास्त्रानुसार कौन पूजा के योग्य होते है?
22. श्रीकृष्ण ही महान है यह घोषणा किसने की?
23. शिशुपाल ने किसकी निन्दा की?

टिप्पणी

24. ''अब मैं कहता हूँ भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा जिसको अच्छी नहीं लगती है वह धनुष को धारण करें'' यह उक्ति किसने कही?
25. शिशुपाल द्वारा भेजे गये दूत ने कैसे श्रीकृष्ण की निन्दा की?
26. सात्यकि ने क्या किया?
27. कब श्रीकृष्ण ने शिशुपाल का सिर काटा?
28. श्रीकृष्ण ने किस अस्त्र से शिशुपाल का सिर काटा?
29. शिशुपाल के शरीर से तेज समूह निकल कर कहां प्रवेश कर गया?
30. शिशुपाल के सिर काटने के बाद किस घटना से सभी विस्मित हुए?

3.3 महाकाव्य के गुण

माघ बहुशास्त्रविद् कवि थे। उसके काव्य में वेद, पुराण, दर्शन, अलंकार, संगीत, समरशास्त्र, छन्द और ज्योतिष इन सभी शास्त्रों का स्पर्श विद्यमान है। चमत्कार पूर्ण श्रमसाध्य इस काव्य में कवि की शक्तिमत्ता स्फुटित हुई। व्याकरण के अनेक नियमों के प्रयोग यहां प्रायः देखे जाते हैं। इस काव्य में स्पष्टता, मधुरता और उर्जस्वलता सभी जगह प्रकट होती हैं। नीचे स्थित पद्य को पढ़कर जान सकते हैं कि चमत्कृति कैसे इस काव्य में प्रकाशित हुई।

क्रूरारिकारी कोरेक कारकः कारिकाकारः।
कोरकाकारकरकः करीरः कर्करोहर्करुक्॥

कृष्ण अजेय शत्रुओं का विनाशक, जगदधिपति, दुष्टों का पीड़क, पदममुकुल के समान जिसके चरण हैं, उसके शरीर बल से हाथी भी पराजित होते हैं, शत्रुओं के सामने भयंकर है।

कुछ लोग कहते हैं कि काव्य गौरव में निष्णात भारवि विरचित किरातार्जुनीय को समझने के लिए ही शिशुपालवध काव्य की रचना करने के लिए कवि उद्यत हुए। इस काव्य में पर्वतों, ऋतुओं, वनविहार, जलक्रीडा, सन्ध्या और प्रभात का मनोहारी वर्णन है। अलंकार प्रयोग में निपुण इस कवि ने अस्ताचलगमन उन्मुख सूर्य का तथा उदयाचल आरुढ़ चन्द्रमा का वर्णन हाथी के कान से बन्धे घण्टों के साथ करने के कारण ''घण्टामाघ'' के रुप में प्रसिद्ध हो गये। जैसे-

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जाहिमरूचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टा द्वयपरिवारितवारणेन्द्र लीलाम्॥

श्रीकृष्ण के सारथी दारुक ने कहा- रज्जु के समान किरण फैलते हुए सूर्य के उदय को तथा अस्ताचल को जाते समय चन्द्रमा का एक समय रैवतक पर्वत कानों से बन्धे घण्टों वाले हाथी के समान सुशोभित हो रहे हैं।

उन्नीसवे सर्ग में कवि ने शब्दालंकार के प्रयोग में महती कुशलता का प्रदर्शन किया। वहां चित्रबंध काव्य का एक सुन्दर प्रयोग दिखाई देता है। कहीं पर एक वर्ण से और कहीं दो वर्णों से श्लोक की रचना की।

दाददो दद्ददुददादी दादादो दूददीदरोः।
दुददादं दददे दुद्दे ददाददददोखददः।।19/114

राजराजी रुरोजाजेरजिरेखजोखजरोखरजाः।
रेजारिजूरजोर्जार्जी रराजर्जुरजर्जरः।।19/102

कवि ने कहा शब्द और अर्थ का सार्थक समन्वय ही कवि की सृष्टि का प्रमाण होता है।

पाठगतप्रश्न-3.3

31. बहुशास्त्रविद् कवि माघ है, यह कैसे ज्ञात होता है?
32. माघ के काव्य में किन शास्त्रों का स्पर्श विद्यमान है?
33. किरातार्जुनीयम् किसकी रचना है?
34. किस ग्रन्थ को समझने के लिए माघ ने शिशुपालवध काव्य की रचना की?
35. शिशुपालवधकाव्य में किन-किन वस्तुओं का वर्णन दिखाई देता है?
36. माघ कैसे ''घण्टामाघ'' में रूप में प्रसिद्ध हुए?
37. महाकवि के सूर्यास्तपूर्वक चन्द्रोदय वर्णन परक श्लोक लिखिए।
38. शिशुपालवधकाव्य में चित्रबध से विहित श्लोक का उदाहरण दीजिए?

3.4 श्रीहर्ष

3.4.1 सामान्य परिचय

श्रीहर्ष नैषधीयचरित तथा खण्डनखण्डखाद्य ग्रन्थों के कर्तारूप में प्रसिद्ध है। श्रीहर्ष 12वीं शताब्दी में कान्यकुब्ज नगर में हुए थे। उनके पिता का नाम श्रीहीर एवं माता मामल्लदेवी था। पिता श्रीहीर वाराणसी के राजा जयचन्द्र के सभा में थे। वहां पर मिथिला से आये हुए नैयायिक उदयनाचार्य से पराजित होकर क्षुब्ध हुए। श्रीहीर ने मरणासन्न अवस्था में अपने पुत्र श्रीहर्ष को उसकी उस मर्यादा को पुनरुद्धार करने का अनुरोध किया। श्रीहर्ष चिन्तामणिमन्त्र के जप का विधन करके देवी त्रिपुरा के अनुग्रह से महती प्रतिभा को प्राप्त करके कान्यकुब्ज राजा की सभा में पुन आये। वहीं पर ही उसके अनुग्रह से नैषधीयचरित की रचना की। वही पर ही खण्डनखण्डखाद्य काव्य से उदयनाचार्य का खण्डन किया। इस प्रधान कवि के विषय में व्यक्तव्य है कि देवभाषा साहित्य के अपकर्षक काल के अन्धकार युग में प्रादुर्भूत इस महाकवि ने उस प्रकार का आलोक दिया कि सभी दिशाएं, चाकचिक्य पूर्ण हो गयी।

टिप्पणी

3.4.2 श्रीहर्ष का देश

कान्यकुब्ज राजा की सभा में सभापण्डित था इस प्रकार श्रीहर्ष कान्यकुब्ज के निवासी हुए। ऐसा ज्ञात होता है।

3.4.3 श्रीहर्ष का समय

कान्यकुब्जाधिपति जयचन्द्र की सभा में थे। राजा ने 1163 ई0 से 1194 ई0 तक राज्यशासन किया। अत: इनका भी यही समय रहा है। न्यूहलार का मत है कि 1163 ई0 से 1194 ई0 के बीच में नैषधीयचरित की रचना की गई।

3.4.4 श्रीहर्ष की कृतियां

श्रीहर्ष के नौ ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। उनमें से नैषधीयचरित एवं खण्डनखण्डखाद्य ही प्रसिद्ध हैं। नैषधीयचरित के अन्तिम सर्ग में श्रीहर्ष ने स्वयं अन्य कृतियों के विषय में कहा है। वे काव्य हैं -

स्थैर्यविचारप्रकरणम्- नाम से ही प्रतीत होता है कि यह दार्शनिक ग्रन्थ है। इसमें क्षणभंगवाद का खण्डन किया है।

विजयप्रशस्ति- यह जयचन्द्र के पिता विजयचन्द्र की प्रशंसापरक काव्य है।

खण्डनखण्डखाद्यम्- यह स्वनाम ख्यात अनिवर्चनीयतासर्वस्वभूत वेदांग का ग्रन्थ है।

गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति- इसमें बंगदेश के किसी राजा की प्रशस्ति का वर्णन है।

अर्णववर्णनम्- इसमें समुद्र का वर्णन है।

छिन्दप्रशस्ति- इसमें छिन्द नाम के किसी राजा की प्रशस्ति का वर्णन है।

शिवशक्तिसिद्धि- इसमें शिव और शक्ति की सिद्धि का वर्णन किया गया है।

नवसाहसांकचरितचम्पू- राजा भोज के पिता 'नवसाहसांक' के चरित का वर्णन है।

नैषधीयचरितम्- इस काव्य में निषध राजा नल के चरित्र को प्रस्तुत किया है इस ग्रन्थ में 22 सर्ग एवं 2830 श्लोक हैं। इस ग्रन्थ में नल के चरित के एक पक्ष का ही वर्णन है। इसमें नल और दमयन्ती के परिणय अवधि का वृतान्त, और नल के सम्भोग का चित्रण, धर्मप्राणता का वर्णनमयी पद्धति से वर्णन किया गया है। राजा नल में दमयन्ती की आसक्ति से दमयन्ती की चिन्ता में दुखित उद्यान में भ्रमण करते हुए राजा द्वारा हंस का पकडा जाना एवं दया के कारण छोडना, हंस प्रत्युपकार भावना से नल की स्तुति दमयन्ती के सामने करता है। दमयन्ती को पूर्व अनुराग का उदय होता है। दमयन्ती के पिता विदर्भराज स्वयंवर का आयोजन करते

हैं। दमयन्ती के सौन्दर्य के कारण देवता भी वहां आते हैं। चार देवता इन्द्र, यम, वायु, और कुबेर ने नल का रूप धारण कर लिया। चार नलरूपधरी देव एवं पांचवे नल सभी की समरुपता से दमयन्ती विचित्र दशा को प्राप्त होती है। सभा के वर्णन के लिए आयी सरस्वती भी श्लेष वर्णन से दमयन्ती को विमोहित करती है। अन्त में दमयन्ती के पतिव्रत और दृढ अनुराग से देवता अपने विशिष्ट चिह्नों को प्रकट करते हैं। जिससे नल का पता चल जाता है। इस प्रकार नल और दमयन्ती के सुखपूर्वक संगम से ग्रन्थ समाप्त हो जाता है।

पाठगतप्रश्न-3.4

39. श्रीहर्ष के दो ग्रन्थों के नाम लिखिए।

40. श्रीहर्ष किस नगर में हुए?

41. श्रीहर्ष के पिता का नाम क्या है?

42. श्रीहर्ष की माता का नाम क्या है?

43. श्रीहर्ष के पिता किस राजा की सभा में थे?

44. श्रीहर्ष के पिता श्रीहीर किस पण्डित से पराजित हुए?

45. श्रीहर्ष ने किस मन्त्र का जप किया?

46. श्रीहर्ष ने किस देवी की उपासना की?

47. श्रीहर्ष ने किस काव्य से उदयनाचार्य को खण्डित किया?

48. श्रीहर्ष का समय?

49. श्रीहर्ष ने कब नैषधीयचरित की रचना की?

3.5 श्रीहर्ष के काव्य का वैशिष्ट्य

नैषधीयचरित की सरस वर्णन पद्धति और शृंगार प्रकर्ष पूर्ण कथा सहृदय के हृदय को आकृष्ट करती है। जैसे श्रीहर्ष का खण्डनखण्डखाद्य काव्य अद्वितीय है वैसे ही नैषधीयचरित भी अपने क्षेत्र में अनुपम है। श्रीहर्ष जैसे दार्शनिक कवि है वैसे ही योगी भी है।

श्रीहर्ष अपने शास्त्र ज्ञान का परिचय प्रत्येक सर्ग में देते है। परन्तु 17 वें सर्ग में उन्होंने अपनी नास्तिक आस्तिक सकल दर्शन की प्रवीणता और व्याकरण में निष्णातता को प्रकट किया है। वेदान्ती श्रीहर्ष ने नैयायिक और वैशेषिको का कविता में उपहास किया-

''मुक्तये यः शिलात्वाय शास्त्रमूचे सचेतसाम्।
गौतम तमवेक्ष्यैव यथा वित्थ तथैव सः॥

टिप्पणी

ध्वान्तस्य वामोरु विचारणायां वैशेषिकं चारुमतं मे।
औलुकमाहुः खलु दर्शनं तत् क्षमं तमस्तत्त्व निरुपणाय॥

श्रीहर्ष की कविता में नारी रुप का वर्णन भी अतीव सजीव है। चौथे सर्ग में विप्रलम्भ शृंगार का वर्णन अतीव रमणीय है। जैसे-

मयांग पृष्टः कुलभामनी भवानमू विमुच्यैव किमन्यदुक्तवान्।
पुपासुता शान्तिमुपैति वारिजा न जातु दुग्धन्मधुनोऽधिकादपि॥

यहां काव्य में बहुत से शास्त्र सम्मत तर्कों का जहां जहां समावेशित करने का प्रयास किया वहां सहृदयों के मन को रंजित करते हैं। उत्प्रेक्षाओं के चमत्कार में नितान्त हृदयग्राही हैं। जैसे-

यदस्य यात्रासु बलोद्धतं रजः स्पुतप्रतापानलधूममंजिम।
तदेव गत्वा पतितं तथाति पंकीभवंकतां विधै॥

यद्यपि नैषधकाव्य को सौम सम्बद्धता के अभाव से एक शब्द का शब्दान्तर अवर्णन होने से माघ ने किरातार्जुनीय की अपेक्षा इस मर्यादा का न्यून प्रयोग किया है। फिर भी नैषधकाव्य की स्थिति रसोल्लास वर्णन में सर्वातिशय है इसलिए कहा गया है कि-

उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः॥

3.6 क्षेमेन्द्र

3.6.1 सामान्य परिचय

क्षेमेन्द्र 11 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कवि थे। क्षेमेन्द्र सिन्धु के पौत्र व प्रकाशेन्द्र के पुत्र थे। क्षेमेन्द्र के पिता प्रकाशेन्द्र ब्राह्मणों के संरक्षक थे। क्षेमेन्द्र कश्मीर राज अनन्त के सभापण्डित थे। अनन्त का शासक काल 1027 ई0 से 1064 ई0 तक था।

3.6.2 क्षेमेन्द्र का देश

क्षेमेन्द्र कश्मीरवासी थे। वहीं पर ये राजा अनन्त के सभापण्डित भी थे। कश्मीर देश वरपुत्रों का देश है। ऐसी कहावत प्रसिद्ध है। उस वरपुत्रों के देश कश्मीर में क्षेमेन्द्र ने जन्म प्राप्त किया।

3.6.3 क्षेमेन्द्र का समय

क्षेमेन्द्र कश्मीर राज अनन्त के सभापण्डित थे। उस अनन्त का शासन काल 1027 ई0 से 1064 ई0 तक था। अतः क्षेमेन्द्र का समय 11 वीं शताब्दी है। यह निश्चित होता है।

3.6.4 क्षेमेन्द्र की कृतियॉ

क्षेमेन्द्र की बहुत सी कृतियॉ प्राप्त होती है। शशिवंशमहाकाव्य, अमृतरंगकाव्य, अवसरसार, मुक्तावली, लावण्यवती, देशोपदेश, पवनपंचाशिका, पद्मकादम्बरी, अवदानकल्पलता, नीतिकल्पतरु, लोकप्रकाशकोश, सेव्यसेवकोपदेश, विनयवल्ली, दर्पदलनम्, कविकण्ठाभरणम्, रामायणमंजरी, भारत मंजरी, वृहत्कथामंजरी, समयमातृका और दशावतारचरितम्।

3.6.5 क्षेमेन्द्र के काव्य के गुण

क्षेमेन्द्र की अवदानकल्पलता को 150 वर्षो के भीतर ही तिब्बत भाषा में अनुवाद का अवसर प्राप्त हुआ। यह क्षेमेन्द्र की धार्मिक उदारता एवं सुन्दर काव्य शैली का प्रबल प्रमाण है।

दशावतारचरित नामक महाकाव्य क्षेमेन्द्र की अन्तिम और मधुरतम कृति है। इसमें स्वतन्त्र और महाप्रौढ महाकाव्य में विष्णु के दश अवतारों का रोचक शैली में वर्णन किया। क्षेमेन्द्र की भाषा मधुर, सरस एवं सुबोध है। जैसे-

दयितजनवियोगोद्वेगरोगातुराणां विभवविरहदैन्यम्लायमाननानानाम्।
शमयतिशितशल्यं हन्त नैराश्यनश्यद्भवपरिभवतान्तिः शान्तिरन्ते वनान्ते॥

पाठगतप्रश्न-3.5

50. क्षेमेन्द्र किस राजा के सभा पण्डित थे?

51. किस देश में क्षेमेन्द्र का जन्म हुआ?

52. क्षेमेन्द्र का समय क्या है?

53. क्षेमेन्द्र की कोई कृति का नाम बताइए?

54. क्षेमेन्द्र की मधुरतम कृति का नाम लिखों?

3.7 कल्हण

3.7.1 सामान्य परिचय

कल्हण ऐतिहासिक कवियों में अद्वितीय हैं। संस्कृत भाषा में इतिहास लेखन के लिए जितने विद्वानों ने प्रयास किया उनमें से कल्हण प्रमुख है। कल्हण ने स्वयं ही स्वयं के जीवनवृत का निर्देश किया है। कल्हण के पिता चणपक थे। चणपक तत्कालीन कश्मीर के राजा हर्षदेव के प्रधान अमात्य थे। कल्हण के चाचा कणक भी राजा हर्ष के आश्रय में थे। हर्ष शत्रु द्वारा

टिप्पणी

कपट से मारे जाने पर चणपक राजाश्रय विहीन हो गये। बाद में कल्हण ने अलकदत्त नामक किसी सत्पुरुष की छत्र छाया में आश्रय लिया। कल्हण ने रामायण महाभारत आदि ग्रन्थों को सम्यक रुप से पढ़ा। साथ ही ज्योतिषशास्त्र में भी उनका पाण्डित्य था।

3.7.2 कल्हण का स्थान

कल्हण कश्मीर देश में आढ्य ब्राह्मण वंश में पैदा हुए। उनका कश्मीर वासी होने में कोई सन्देह नहीं है।

3.7.3 कल्हण का समय

राजा सुस्सल के पुत्र जयसिंह के राज में कल्हण ने राजतरंगिणी काव्य की रचना की। जयसिंह का शासनकाल 1127ई0 से 1159ई0 तक था। अत: कल्हण का समय बारहवीं ईसवी निश्चित होता है।

3.7.4 कल्हण की कृति

इस ऐतिहासिक कवि का राजतरंगिणी एकमात्र ऐतिहासिक काव्य प्राप्त होता है। सभी का कहना है कि इतिहास ग्रन्थों का निरीक्षण करके निपुणता पूर्वक राजतरङ्गिणी/राजतरंगिणी की रचना की। कल्हण ने 1148 ई0 से प्रारम्भ करके राजतरंगिणी को 1150 ई0 में समाप्त किया। इस काव्य में जितने भी अंश हैं उनमें ऐतिहासिकता उपलब्ध है।

3.7.5 राजतरंगिणी ग्रन्थ

यह विशालकाय ग्रन्थ आठ तरंगों में विभक्त है। यहां कल्हण ने प्राचीन काल से प्रारम्भ करके अपने समय तक के कश्मीर देश के शासकों का इतिहास लिखने का प्रयत्न किया। इस ग्रन्थ में विक्रम संवत के प्रारम्भ से बारहवी शताब्दी के पूर्व में हुए किसी गोनन्द नाम के राजा तक का इतिहास क्रमश: वर्णित है। इस ग्रन्थ के प्रथमतरंग में राजाओं का उल्लेख कालरहित निर्देश किया है। वहां पर पौराणिक कथा एवं जनश्रुति के आधार पर इतिहास निर्मित है। उसके बाद राजाओं के इतिहास में काल का निर्देश प्राप्त होता है। सर्वप्रथम 813-814 ई0 तिथि का निर्देश किया है। इसके बाद की घटनाएं, प्रमाणिक रूप एवं वैज्ञानिक पद्धति से निबद्ध किया है आठवें तरंग की घटनाओं का साक्षात्कार करके निबद्ध किया है। अत: उनकी सत्यता में सन्देह ही नहीं है।

3.7.6 कल्हण के काव्य की विशिष्टता

सामान्यत: प्राय: सभी ऐतिहासिक कवि अपने देश की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए अपने देश

में विद्यमानगुणों का वर्णन करने में संकोच नहीं करते हैं। किन्तु कल्हण उनके समान नहीं थे। उन्होंने नितान्त निष्पक्षता से इतिहास की रचना की वे स्वयं लिखते हैं-

''श्लाघ्यः स एव गुणवान् रागद्वेषबहिष्कृता।
भूतार्थकथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती॥

राजतरंगिणी ग्रन्थ में तत्कालीन राजाओं के गुण व दोषों, राजसेवकों के कृतघ्नता स्वामिभक्ति आदि सभी का यथार्थ वर्णन किया है। इस काव्य में निन्दा व स्तुति दोनों निष्पक्षता से लिखे गये। इस ग्रन्थ में इतिहास के समान काव्यत्व भी विद्यमान है।

जैसे-

''राज्याच्च्युतस्य बहूशः परिवाररामा, कोशादि तस्य रिपवो व्रजतोऽपजहनुः।
उर्वीरुहोविगलितस्य नगेन्द्रश्रृंगा द्वल्लीफलादि रभसादिव गण्डशैलाः॥

पाठगन्तप्रश्न-3.6

55. कल्हण किस देश में पैदा हुए?

56. कल्हण की कृति का नाम क्या है?

57. राजतरंगिणी कैसा ग्रन्थ है?

58. राजतरंगिणी में कितने तरंग है?

59. कल्हण के पिता और चाचा का नाम लिखिए?

3.8 भट्टिस्वामी

3.8.1 सामान्य परिचय

भट्टिकाव्य के प्रणेता भट्टिस्वामी थे इनके पिता का नाम श्रीधरस्वामी था। भट्टिस्वामी के जीवन चरित के विषय में कोई भी प्रामाणिक मत नहीं है। उनके जीवन के विषय में कथा सुनी जाती है। भट्टिस्वामी के जन्म के बाद ही माता का वियोग हो गया। उनके पिता श्रीधर स्वामी भी नवजात अपने पुत्र को त्यागकर सन्यासी हो गये। वहां श्रीधरसेन नाम का कोई राजा था उसने भट्टिस्वामी का पालन-पोषण किया।

इनका व्याकरणशास्त्र में प्रगाढ़ पाण्डित्य था। इस विषय में इनका काव्य ही प्रमाण है। साथ ही अलंकारादि शास्त्रों में उनका पाण्डित्य था।

टिप्पणी

3.8.2 भट्टिस्वामी का स्थान

ये सौराष्ट्र जनपद के अन्तर्गत वलभी नगर में जन्में थे ऐसा प्रसिद्ध है।

3.8.3 भट्टिस्वामी का स्थान

भट्टिस्वामी ने अपने काव्य में लिखा है कि वे राजा श्रीधरसेन के आश्रय में थे। श्रीधरसेन नाम के चार राजा प्रसिद्ध है। वे 500-650 ई0 तक हुए थे। इनमें से किस श्रीधर के समय थे यह निश्चित नहीं है। श्रीधरसेन द्वितीय का एक शिलालेख प्राप्त होता है। वहां भट्टिनाम के विद्वान को राजाकृत भूमिदान की वार्ता मिलती है। यदि ये भट्टि भट्टिकाव्य के प्रणेता है तो भट्टि का समय 610 ई0 मान सकते हैं। अन्य भट्टि की कल्पना से भी सातवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हो सकते। अतः भट्टिस्वामी सातवीं ईसवी शताब्दी में हुए थे, ऐसा कह सकते है।

3.8.4 भट्टिस्वामी की कृति

भट्टिस्वामी का एक मात्र काव्य भट्टि काव्य प्राप्त होता है। शास्त्रकाव्यों में भट्टि काव्य प्रसिद्धतर है। इस काव्य के निर्माण का उद्देश्य मनोविनोद के साथ व्याकरण का ज्ञान देना था। व्याकरण शास्त्र का प्रयोग इस काव्य में सम्यक्ता से देखा जाता है। भट्टिस्वामी स्वयं लिखते है। जैसे-

''दीपतुल्यः प्रबन्धेऽयशब्दलक्षणचक्षुषाम्।
हस्तादर्श इवान्धनां भवेदव्याकरणादृते''॥

अर्थात् व्याकरण को जानने वालों के लिए यह काव्य दीपक के समान है। किन्तु व्याकरण ज्ञान रहित जनों के लिए अन्धे के हाथ में दर्पण के समान है। इस काव्य की रचना भट्टिस्वामी ने की इसलिए इसे भट्टिकाव्य कहा जाता है। यह काव्य रावणवध नाम से भी प्रसिद्ध है।

यह काव्य वाल्मीकि के रामायण आश्रित है। इसमें रामायण की कथा वर्णित है। इसमें 12 सर्ग है।

3.8.5 भट्टिस्वामी के काव्य की विशिष्टता

इस काव्य का प्रधान वैशिष्ट्य यह है कि व्यवहार में व्याकरण के जो रूप प्राप्त होते हैं। उनके साथ अप्रचलित व्याकरण के सभी प्रयोग यहां प्राप्त होते हैं। मल्लिनाथ के अनुसार भट्टिकाव्य ही उदाहरण काव्य है। अन्य टीकाकार भी कहते हैं कि प्रयोग के द्वारा व्याकरण की शिक्षा प्रदान करने के लिए कवि ने इस ग्रन्थ का निर्माण किया है। भट्टिकाव्य के मुख्यरूप से चार भेद है। प्रकीर्णकाण्ड, अधिकारकाण्ड, प्रसन्नकाण्ड, और तिङन्तकाण्ड। उनमें प्रारम्भ से पांचवे सर्ग तक प्रकीर्णकाण्ड है वहां व्याकरण के विविध नियम, प्रयोग द्वारा

उद्धृत किये हैं। पांचवे सर्ग से नौवें सर्ग तक अधिकारकाण्ड है। इसमें प्रत्ययों का व्यवहार, आत्मनेपद परस्मैपद विधन, णत्वविधन और णत्वविधन को प्रयोगों से प्रदर्शित किया है। दसवें सर्ग से तेरहवें सर्ग तक प्रसन्नकाण्ड है। इसमें अलंकारों का प्रयोग दिखाई देता है। अठाहरवें सर्ग से अन्तिम सर्ग तक तिडन्त काण्ड है। यहां दस लकारों का प्रयोग प्राप्त होता है। भट्टिकाव्य न केवल व्याकरण लक्षण के प्रयोग ज्ञान के लिए निर्मित है, अपितु अलंकार, रस, छन्द, काव्यगुण, व्यंजना और चित्रकाव्य आदि भी प्राप्त होते हैं। काव्य के दसवें सर्ग में शब्दार्थालंकारों के निवेश से ग्यारहवें सर्ग में माधुर्यगुण के समावेश से इसका गौरव बढता है।

यमकालंकार का एक उदाहण द्रष्टव्य-

''अवसितं हसितं प्रसितं मुदा विलसितं ह्यसितं स्मरभासितम्।
न समदाः प्रमदा हतस्मदाः पुरोहितं विहितं न समीहितम्॥

लुड-लंकार का प्रयोग जैसे-

माज्ञासीस्त्वं सुखी रामो यदकार्षीत् स रक्षसाम्।
उदतारीदुदन्वन्तः पुरं न परितोऽरुधत्॥

इस काव्य का शरद्वर्णन नितान्त हृदयस्पर्शी है-

तरंगसंगाचचपलैः पलाशैर्ज्वालाश्रियं सातिशयं दधन्ति।
सधुमदीप्ताग्निरुचीनि रोजुस्ताम्रोत्पलान्याकुलषट्पदानि॥

इस प्रकार सूर्य वर्णन में भी

''दुरुत्तरे पंक इवान्धकारे मग्नं जगत्सन्ततरश्मिरज्जुः।
प्रणवष्टमूर्तिप्रविभागमुद्यन् समुज्जहारेव ततो विवस्वान्॥

भट्टिकाव्य के निम्नलिखित श्लोक तो एकावली नामक अलंकार का प्रसिद्ध उदाहरण है-

न तज्जलं यन्न सुचारुपंकजं न पकंजं तद्यदलीनषट्पदम्।
न षट्पदोऽसौ न जुगुंज यः कलं न गुंजितं तन्त जहार यन्मनः॥

इस काव्य में महाकाव्य की विशिष्टता भी है इस हेतु से भट्टिकाव्य महाकाव्य है।

पाठगतप्रश्न-3.7

60. भट्टिस्वामी के पिता का नाम लिखें?
61. भट्टिस्वामी किस राजा के आश्रित थे?
62. भट्टिस्वामी किस देश में पैदा हुए?
63. भट्टिस्वामी का समय क्या है?
64. भट्टिकाव्य किस प्रकार का है?

टिप्पणी

65. भट्टिस्वामी की रचना लिखों?

66. ''दीपतुल्यः प्रबन्धेऽयम् - किसके विषय में कहा गया है?

67. भट्टिकाव्य किस पर आश्रित है?

68. एकावली नामक अलंकार का प्रसिद्ध उदाहरण भट्टिकाव्य से दीजिए?

पाठसार

माघ- इस पाठ में हम ने माघ कवि के जीवन चरित्र, उसके स्थान, काल, कृति, काव्य का वैशिष्ट्य, आदि विषयों को पढ़ा। माघ के पिता दत्तक विद्वान और दानप्रिय थे। मीनमल्लाख्या नगर में जन्म ग्रहण किया। इस गुर्जरनिवासी कवि ने श्रीमालनगर में निवास किया। विद्वान् सातवीं शताब्दी के अन्त से आठवी शताब्दी तक माघ का समय मानते हैं। शिशुपालवध नामक एकमात्र काव्य से महाकवि माघ यशस्वी हुए।

महाभारत उपजीव्य इस महाकाव्य में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल के वध की कथा वर्णित है। निष्प्राण इस महाभारतोक्त कथा को माघ ने वर्णन माहात्म्य से चमत्कारी बनाया।

श्रीहर्ष-इस पाठ में श्रीहर्ष के जीवन वृतान्त, देश, काल और कृतियां का वर्णन है। श्रीहर्ष कान्यकुब्ज निवासी थे। श्रीहीर उनके पिता तथा मामल्लदेवी इनकी माता का नाम था। उदयनाचार्य से परास्त हुए, अपने पिता श्रीहीर के सम्मानरक्षार्थ नैषधीयचरित की रचना की। राजा जयन्तचन्द का समय ही इनका समय रहा है। अतः से बारहवीं शताब्दी में हुए थे। श्रीहर्ष के नौ ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। उनके नैषधीयचरित और खण्डनखण्ड खाद्य काव्य ही अधिक प्रसिद्ध हुए। इनको छोड़कर अन्य ग्रन्थ स्थैर्यविचारप्रकरण, विजयप्रशस्ति, गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, अर्णववर्णन, छिन्दप्रशस्ति, शिवशक्तिसिद्धि, तथा नवसाहसांकचरितचम्पू हैं।

नैषधीयचरित में 22 सर्ग एवं 2830 श्लोक है। नलदमयन्ती के प्रणय कथा का वर्णन किया गया है। दमयन्ती के विषय में चिन्तनशील राजा नल का राजहंस के परित्याग का वर्णन प्रसिद्ध है। नल का देवताओं के साथ उपमा का वर्णन भी प्रसिद्ध है। नल और दमयन्ती के सुखपूर्वक संगम से ग्रन्थ की समाप्ति की गई है।

क्षेमेन्द्र- कश्मीरदेशीय क्षेमेन्द्र ग्यारहवीं शताब्दी में हुए थे। उसकी सभी कृतियां लोक प्रसिद्ध और काव्यगुण सम्पन्न हैं। सभी कृतियों में दशावतारचरित काव्य अतिशय प्रसिद्ध है।

कल्हण- ऐतिहासिक कवियों में कल्हण अद्वितीय है। बारहवीं शताब्दी में कश्मीर देश में इनका जन्म हुआ। उनके पिता चपणक राजा हर्ष के प्रधान आमात्य थे अलकदत्ता नामक किसी सज्जन पुरुष ने कल्हण का पालन-पोषण किया। इनकी रचना का नाम राजतरंगिणी है। इसमें आठ तरंग है। राजा जयसिंह के राज्य में कल्हण ने राजतरंगिणी को निर्मित किया। इस काव्य में गोनन्द नामक राजा से आरम्भ करके तत्कालपर्यन्त कश्मीर देश के राजाओं का इतिहास वर्णित है।

भट्टिस्वामी- भट्टिस्वामी सौराष्ट्रजनपद के अन्तर्गत वलभीनगर में सातवीं शताब्दी में हुए थे। भट्टिस्वामी के पिता श्रीधरस्वामी थे। पिता के द्वारा संन्यासी हो जाने पर श्रीधरसेन नामक राजा ने इनका पालन-पोषण किया। इनकी रचना का नाम भट्टिकाव्य है। जिसका दूसरा नाम रावणवध भी है। शास्त्रकाव्यों में भट्टिकाव्य प्रसिद्ध है। यह काव्य महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण आश्रित है। इसमें 12 सर्ग है। यहां व्याकरणशास्त्र का सम्यक्, प्रयोग दिखाई देता है।

आपने क्या सीखा

- माघ, श्रीहर्ष, क्षेमेन्द्र, कल्हण और भट्टिस्वामी के देशकाल एवं कृतियों को जाना।
- कवियों की काव्य रचना शैली को जाना।
- शिशुपालवध महाकाव्य के विषय में जानकारी प्राप्त की।
- माघे सन्ति त्रयो गुणाः उक्ति का तात्पर्य जाना।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. माघ के पिता का नाम दत्तक था।
2. माघ के पितामह सुप्रभदेव थे।
3. माघ के पितामह राजा वर्मलात की सभा में थे।
4. माघ का जन्म मीनमल्लाख्य नगर में हुआ।
5. माघ का निवासस्थल श्रीमालनगर था।
6. आनन्दवर्धन कृत ग्रन्थ का नाम ध्वन्यालोक है।
7. वामनकृत ग्रन्थ का नाम काव्यालंकार है।
8. आनन्दवर्धन कृत ध्वन्यालोक में माघ के पद्यों को उद्घृत करने से माघ आनन्दवर्धन के पूर्वकालिक है ऐसा ज्ञात होता है।
9. माघ का समय 7वीं शताब्दी के अन्त से आठवीं शताब्दी तक है।
10. माघ की रचना शिशुपालवध है।
11. युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण ने शिशुपाल का वध किया। यह इसका मुख्य विषय भी है।
12. शिशुपाल का उपजीव्य व्यासरचित महाभारत है।

टिप्पणी

13. शिशुपालवध का नायक श्रीकृष्ण है।

14. शिशुपालवध का प्रतिनायक शिशुपाल है।

3.2

15. युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का सम्पादन किया।

16. शिशुपालवध में 22 सर्ग है।

17. पाण्डवों ने वनवास की अवधि पूर्ण करके इन्द्रप्रस्थ नगर में वास किया।

18. राजसूय यज्ञ में जम्बूद्वीप के सभी राजाओं को बुलाया था।

19. यज्ञ में श्रीकृष्ण सर्वकर्मदृष्टा थे।

20. शास्त्रानुसार यज्ञ की समाप्ति पर गुणवान को अर्घ्यप्रदान करने का नियम है।

21. शास्त्रानुसार षड्गवेद अध्ययन अध्यापनरत ब्राह्मणस्नातक, गुरु, बन्धु, जामाता, राजा, ऋत्विक याज्ञिक ये छह सदस्य पूजा के योग्य होते हैं।

22. श्रीकृष्ण ही महान है यह भीष्म ने उद्घोष किया।

23. शिशुपाल ने श्रीकृष्ण की निन्दा की।

24. ''अब मैं कहता हूँ जिसको भगवान श्रीकृष्ण की पूजा अच्छी नहीं लग रही वह धनुष को धारण करे''। यह उक्ति भीष्म ने कही।

25. शिशुपाल द्वारा प्रेषित दूत ने श्लिष्ट शब्दों से श्रीकृष्ण की निन्दा की।

26. सात्यकि ने शिशुपाल के आक्षेपों का उचित उत्तर दिया।

27. सौ अपराधों के पूर्ण होने पर श्रीकृष्ण ने शिशुपाल का सिर काटा।

28. श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का शिरच्छेदन किया।

29. शिशुपाल के शरीर से एक तेज निकलकर श्रीकृष्ण के शरीर में प्रवेश किया।

30. एक तेज के श्रीकृष्ण के शरीर में प्रवेश करने की घटना से सभी विस्मित हुए।

3.3

31. माघ के काव्य में वेद, पुराण, दर्शन, अलंकार संगीत, समरशास्त्र, छन्द, ज्योतिष आदि सभी शास्त्रों का स्पर्श विद्यमान है अतः माघ बहुशास्त्रविद् कवि माने जाते हैं।

32. वेद, पुराण, दर्शन, अलंकार, संगीत, समरशास्त्र छन्द ज्योतिष आदि सभी शास्त्रों का स्पर्श विद्यमान है।

33. किरातार्जुनीय भारवि की रचना है।

टिप्पणी

34. किरातार्जुनीय ग्रन्थ को समझने के लिए माघ ने शिशुपालवध की रचना की।

35. शिशुपालवध काव्य में पर्वत, ऋतु, वनविहार, जलक्रीडा, सन्ध्या और प्रभात आदि वर्णन दिखाई देता है।

36. अस्ताचल जाते सूर्य और उदयाचल जाते चन्द का वर्णन हाथी के कान में लटके घण्टों के साथ उपमा के कारण 'घण्टामाघ' के रुप में प्रसिद्ध हुए।

37. माघ कवि का सूर्यास्त व चन्दोदय वर्णन निम्न श्लोक मे है-

उदयति वितोर्ध्वरश्मिरज्जवहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बितघण्टा द्वयपरिवारितवारणेन्द्र लीलाम्॥

38. शिशुपालवध में चित्रबन्ध से विहित श्लोक-

दाददो दद्ददुददादी दादादो दूददीदरोः।
दुददादंददद दुद्दे ददाददददोखददः।

3.4

39. श्रीहर्ष के दो ग्रन्थ नैषधीयचरितम् और खण्डनखण्डखाद्य हैं।

40. श्रीहर्ष कान्यकुब्ज नगर में हुआ।

41. श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर था।

42. श्रीहर्ष के माता का नाम मामल्लदेवी था।

43. श्रीहर्ष के पिता जयचन्द्र राजा की सभा में थे।

44. श्रीहर्ष के पिता उदयनाचार्य से पराजित हुए।

45. श्रीहर्ष ने चिन्तामणि मन्त्र का जप किया।

46. श्रीहर्ष ने त्रिपुरा देवी की उपासना की।

47. श्रीहर्ष खण्डनखण्डखाद्य ग्रन्थ से उदयनाचार्य को खण्डित किया।

48. श्रीहर्ष का काल बारहवीं शताब्दी ईसवी था।

49. श्रीहर्ष 1163 से 1174 ई0 के बीच नैषधीयचरितम् की रचना की।

3.5

50. क्षेमेन्द्र राजा अनन्त की सभा पण्डित थे।

51. क्षेमेन्द्र कश्मीर देश में पैदा हुए।

52. क्षेमेन्द्र ग्यारहवीं शताब्दी में हुए।

टिप्पणी

53. क्षेमेन्द्र की रचनाए – शशिवंशमहाकाव्य, अमृतरंगकाव्य, अवसरसार, मुक्तावली, लावण्यवती, देशोपदेश, पवनपंचाशिका, दशावतारचरित,

54. क्षेमेन्द्र ने मधुरता के लिए दशावतारचरित की रचना की।

3.6

55. कल्हण कश्मीर देश में हुए।

56. कल्हण की रचना राजतरंगिणी है।

57. राजतरंगिणी एक ऐतिहासिक काव्य है।

58. राजतरंगिणी में आठ तरंग हैं।

59. कल्हण के पिता का नाम चणपक और चाचा का नाम कणक था।

3.7

60. भट्टिस्वामी के पिता का नाम श्रीधर स्वामी है।

61. भट्टिस्वामी राजा श्रीधरसेन के आश्रय में थे।

62. भट्टिस्वामी सौराष्ट्र जनपद के अन्तर्गत वलभीनगर में हुए।

63. भट्टिस्वामी सातवीं शताब्दी में पैदा हुए।

64. भट्टिकाव्य एक शास्त्र काव्य है।

65. भट्टिस्वामी की कृति नाम भट्टिकाव्य है।

66. दीपतुल्यः प्रबन्धेयम् भट्टिकाव्य को कहा गया है।

67. भट्टिकाव्य रामायण कथाश्रित काव्य है।

68. एकावली नामक अलंकार का प्रसिद्ध उदाहरण–

न तज्जलं यन्न सुचारुपंकजं न पकंजं तद्यदलीनषट्पदम्।
न षट्पदोखसौ न जुगुंज यः कलं न गुंजितं तन्त जहार यन्मनः।।